ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 19 कुल पृष्ठ-8 7 से 13 फरवरी, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 मा.शी.कृ.-13

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का भव्य समापन

आजादी आन्दोलन एवं क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म-जयन्ती को वर्ष 2024 में आर्य समाज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनायेगा

– स्वामी आर्यवेश

राष्ट्र की सुरक्षा के लिए जातिवाद एवं आतंकवाद मिटाना आवश्यक

– अनिल आर्य

नैतिक मूल्यों का ह्रास भारतीय संस्कृति को चुनौती

– प्रेमपाल शास्त्री

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में गत 1, 2 व 3 फरवरी, 2019 को पंजाबी बाग स्टेडियम, रिंग रोड, नई दिल्ली में आयोजित 40वें अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का समापन भव्यता के साथ हो गया। सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से लगभग 2500 आर्य प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सम्मेलन के दौरान प्रातः 9 बजे से रात्रि 9.30 बजे तक निरन्तर कार्यक्रम चलते रहे, इनमें 251 कुण्डीय पर्यावरण शुद्धि यज्ञ, राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन, राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन, व्यायाम एवं शक्ति प्रदर्शन, भजन संन्ध्या, वेद संस्कृति रक्षा सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन तथा राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आदि मुख्य रहे। 2 फरवरी, 2019 को राष्ट्रीय एकता शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें हजारों लोगों ने भाग लेकर गगनभेदी नारों से आकाश को गुंजा दिया। शोभा यात्रा में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड एवं गौहत्या जैसे ज्वलन्त मुद्दों पर नारे लगाये जा रहे थे। रास्ते में शोभा यात्रा में भाग लेने वाले आर्यजनों का फल एवं फूलों से जोरदार स्वागत किया। स्थान-स्थान पर जलपान की व्यवस्था की गई थी। शोभा यात्रा का नेतृत्व सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य जी कर रहे थे। इनके अतिरिक्त वीतराग संन्यासी स्वामी चन्द्रवेश जी (गाजियाबाद), स्वामी धर्ममुनि जी (बहादुरगढ़), स्वामी सच्चिदानन्द जी (यमुनानगर), स्वामी सोम्यानन्द जी (मथुरा), स्वामी शांतानन्द जी (अलीगढ़) आदि संन्यासी एवं विभिन्न प्रान्तों से आये आर्य युवा नेता भी शोभा यात्रा में चल रहे थे।

इस त्रिदिवसीय आर्य महासम्मेलन में कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, मांसाहार, धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड तथा आतंकवाद के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान चलाने और युवा पीढ़ी को संस्कारित करने हेतु युवा निर्माण शिविरों का आयोजन करने के महत्वपूर्ण निश्चय हुए। इसी प्रकार पूरे राष्ट्र में गौहत्या, नशाखोरी एवं राजनीति के अपराधीकरण जैसे मुद्दों पर प्रस्ताव पारित किये गये। संस्कृत भाषा को राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय स्तर पर सम्मान दिलाने, जनसंख्या नियंत्रण हेतु कानून बनाने, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को पुर्नवास एवं आरक्षण की सुविधा प्रदान कराने सम्बन्धी प्रस्ताव भी पारित किये गये। महासम्मेलन में प्रतिदिन प्रातः पर्यावरण शुद्धि यज्ञ का आयोजन किया गया जिसके ब्रह्मा पद को प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य अखिलेश्वर जी ने सुशोभित किया। आचार्य अखिलेश्वर जी ने अपने मधुर उपदेशों द्वारा याज्ञिक आर्यजनों को यज्ञमय जीवन बनाने की प्रेरणा दी।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने परिषद् की भावी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् युवा पीढ़ी को संस्कारित करने के लिए कृत संकल्प है। देश में बढ़ते हुए आतंकवाद एवं जातिवाद से लड़ने के लिए आर्य युवकों को संगठित होकर कार्य करना होगा। परिषद् इस दिशा में हजारों युवाओं को संगठित करने में लगी हुई है। देश में जातिवाद के कारण समाज टूट रहा है। अतः आवश्यकता है कि गरीब वर्गों को पुनर्वास एवं आर्थिक आरक्षण की सुविधा प्राप्त हो।

आर्य पुरोहित सभा के प्रधान श्री प्रेमपाल शास्त्री ने लिव-इन-रिलेशनशिप तथा समलैंगिकता जैसे संवेदनशील विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए आक्रोश व्यक्त किया और कहा कि भारतीय संस्कृति को समूल नष्ट करने के लिए अनैतिकता को हर स्तर पर बढ़ावा दिया जा रहा है।

श्री जय भगवान गोयल ने कहा कि देश में जनसंख्या नियंत्रण कानून सख्ती से लागू किया जाना चाहिए, ताकि देश के विकास में किसी प्रकार की बाधा न आये।

महासम्मेलन में आर्य केन्द्रीय सभा करनाल के प्रधान प्रो. आनन्द सिंह ने ध्वजारोहण किया। उनके अतिरिक्त आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद, हापुड़, गाजियाबाद तथा गन्नौर, सोनीपत आदि नगरों से भी सैकड़ों आर्यजन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। पूर्व महापौर श्री सुभाष आर्य ने कहा कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। उन्होंने हिन्दी भाषा को राष्ट्रीय एकता का मूल आधार बताया।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने उद्बोधन में राष्ट्ररक्षा के लिए नशामुक्त, जातिवाद मुक्त, साम्प्रदायिकता मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त, पाखण्ड एवं अन्धविश्वास मुक्त, नारी उत्पीड़न मुक्त तथा शोषण मुक्त समाज बनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जब तक समाज में आर्थिक विषमता रहेगी तब तक राष्ट्र का विकास नहीं हो सकता। इसी प्रकार जातिवाद और साम्प्रदायिकता का जहर राष्ट्र की नस-नस में व्याप्त हो चुका है जिससे हमारा राष्ट्र अन्दर से खोखला होता जा रहा है। युवा पीढ़ी नशे का शिकार होकर निरन्तर पतन की ओर जा रही है। महिलाओं का हर स्तर पर उत्पीड़न होता है। चाहे कन्या भ्रूण हत्या के रूप में, चाहे दहेज हत्या के रूप में और चाहे घरेलू हिंसा, बलात्कार एवं अश्लीलता के नाम पर तिरस्कार हो। नारी समाज में अपमानित हो रही है। धर्म के नाम पर पनप रहे अन्धविश्वास एवं पाखण्ड अपने चरम सीमा पर है। ऐसी स्थिति में राष्ट्र रक्षा कैसे सम्भव हो सकती है। राष्ट्र की रक्षा के लिए

शेष पृष्ठ 8 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

खजूर और अंगूर कितने पास कितने दूर

– देव नारायण भारद्वाज

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पन्थी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

खजूर के फल मधुर स्वादिष्ट गुणकारी होते हैं। उनकी लालसा से एक व्यक्ति खजूर के पेड़ पर चढ़ता ही चला गया। बहुत ऊपर पहुँचने के बाद खजूर अब भी उसकी पकड़ से दूर थे, तब उसने नीचे की ओर देखा और दंग रह गया। हाय! मैं इतने ऊपर और धरती कितनी नीचे। अब तो मैं गिर ही पडूंगा? ईश्वर! मुझे बचाओ, दया करो। फल नहीं चाहिए, मुझे नीचे उतरने में सफल बनाइए। चढ़ते समय तो उसने अपने किसी परिजन–पुरजन की झलक नहीं स्वीकार की, क्योंकि उसके खजूर बंट जाते और उसे कम पड़ जाते। पर यदि वे पेड़ के नीचे भी खड़े रहते तो उसे इतना अधिक भय नहीं रहता, किन्तु अब अकेले पड़ जाने पर उसका भय बढ़ता ही जा रहा था। इसीलिए अब उसने परमेश्वर को साझीदार बनाने का निश्चय कर लिया था। खजूर न सही, ईश्वर मुझे बचा लो, मुझे नीचे उतार दो। मैं घर से रुपये लाकर तुम्हारा भोग लगाऊँगा और सबको प्रसाद वितरित कर खिलाऊँगा। प्रभु स्मरण संकल्प से उसका भय कम हुआ और वह पेड़ के आधे भाग तक उतर आया सोचने लगा बोल दिया है तो सोचे हुए रुपयों के आधे भाग का प्रसाद तो चढ़ा ही दूंगा। ज्यों–ज्यों वह नीचे उतरता गया उसके बोले गये प्रसाद की मात्रा कम होती गई। अब जब वह कूद कर एकदम नीचे उतर गया, तब बोला – ''जान बची खजूर भुलाये। उतर बुद्धू नीचे आए, चढ़ गये हम, उतर गए हम। व्यर्थ बुलाये ईश्वर तुम।''

जो लोग ऊपर ही ऊपर देखते हैं और नीचे की ओर मुड़ कर झांकते नहीं तो उनकी यही दशा होती है कि वे शरीर से नीचे गिरते हैं तो उन्हें थाम लेती है धरती और जब वे चरित्रहीनता, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, दुराचार के कारण पतित होकर नीचे गिरते हैं तो धरतीमाता भी उन्हें स्थान नहीं देती है और उन्हें अपने कलंकित मुख को छिपाने के लिए हथकड़ी में जकड़कर जाना पड़ता है बन्दीगृह। वेदमाता का कथन है –

विशां च वै स सबन्धूनां चान्नस्य चान्नाद्यस्य
च प्रियं धाम भवति य एवं वेद।।
अथर्व 15.8.3।।

मन्त्राशय यही है कि मनुष्य होने की विद्वता योग्यता उसके मात्र स्वपोषण में नहीं। प्रत्युत पहले पर पोषण फिर स्वयं पोषण के व्यवहार से परिलक्षित होती है। इसके लिए वह पुरुषार्थ पूर्वक जो अन्न–धन अर्जित करता है, उसे अधिकाधिक स्वादिष्ट ही नहीं स्वास्थ्यवर्द्धक व्यंजनों का रूप देकर अकेला ही नहीं, अपने बन्धु–बान्धवों के साथ मिलकर उपभोग करता हैं इसको परमात्मा का आश्रय तो मिलता ही है सर्वहितकारी होने से संसार में भी प्रतिष्ठित हो जाता है। गांव देहात में रहने वाले श्रमजीवी लोग 'मेरे बीसों नाखूनों की कमाई है।' कहकर अपने उत्पादन व उपलब्धि पर गर्व करते हैं। वे झोपड़ी में रह लेते हैं, साधारण शाक रोटी खा लेते हैं, किन्तु सायंकाल विश्राम के क्षणों में प्रायः दूरदर्शन कम, रामायण चर्चा व कीर्तन पर प्रसन्न रहते हैं और गहन निद्रा प्राप्त करते व ब्रह्म मुहूर्त में उठकर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर होते हैं। उनका आत्म सन्तोष निम्नांकित दोहे में उमड़ पड़ता है –

देख परायी चू पड़ी, मत ललचावे जीभ।
रूखा–सूखा खाय के, तू ठण्डा पानी पीव।।

उनको लक्कड़ हजम, पत्थर हजम, जो करते शारीरिक श्रम। इसे आप उनके साथ मत जोड़ देना जो किसी भी रूप में सड़क, पुल व भवन निर्माण कार्य से जुड़े होते, भरपूर वेतन, भत्ता, ग्रहण करते हुए भी लक्कड़–पत्थर–लोहा भी हजम कर जाते हैं, किन्तु उन्हें पचता नहीं, और अनन्ततः बेड़ियों में जकड़ कर मुंह छुपाते हुए पकड़े जाते हैं। एक किसान प्रभातबेला में अपने खेत पर काम करने को निकला, उसकी पत्नी ने मोटे–मोटे आठ टिक्कड़ (रोटी) प्याज–चटनी सहित उसके प्रातराश एवं मध्यान्ह प्राश के लिए बांध दिये थे। उसके खेतों के समीप एक कुंआ व गलियारा था, जहां बैठकर यात्री किंचित विश्राम करके आगे प्रस्थान कर जाते थे, वहीं पर बैठकर योग्य वैद्य जी अपनी थकान मिटा रहे थे, उन्होंने देखा कि किसान ने स्वादपूर्वक चार रोटी खा ली और ऊपर से एक लोटा पानी पी लिया। वैद्य जी ने किसान को परामर्श दिया जो भोजन के तत्काल बाद भरपूर पानी पीता है वह बीमार होकर अल्पकाल में मर जाता है। किसान ने पूछा – वैद्य जी

बताइये फिर किस समय पानी पीना चाहिए। वैद्य जी ने कहा – प्यास लगे तो भोजन के बीच में पानी पी सकते हैं। किसान ने शेष बची चारों रोटी खा ली और बोला अब ठीक है वैद्य जी। उन्होंने हंसते हुए कहा तुझे कुछ नहीं होगा मित्र – श्रमजीवी, दीर्घजीवी होता है। किंचित चिन्ता मत कर।

सायंकाल को उसी गलियारे से बचपन के दो मित्र जिधर जा रहे थे, उधर से एक सन्त इधर आ रहे थे। मित्रों ने पूछा – महात्मन आगे कोई खतरा तो नहीं है। महात्मा ने बताया – खतरा है, मार्ग में दो नागिन पड़ी हैं, उनसे बचकर निकल जाना अन्यथा वे तुम्हें डस लेगी। यहाँ पर दोहे का एक शब्द 'चू पड़ी' ने अपना अर्थ बदल लिया। किसी महिला यात्री की एक अंगूठी एक जंजीर उसके शरीर से चू पड़ी अर्थात् गिर गई थी। मित्रों ने कहा – महात्मा भी कितने मूर्ख होते हैं। यहाँ नागिन तो कहीं नहीं है, शायद इन आभूषणों को ही महात्मा नागिन बता रहे होंगे। पुराने मित्र परस्पर इस बात पर गुर्राने लगे कौन सोने के जंजीर लेगा और कौन अंगूठी। इसी बंटवारे में दोनों लड़ मरे। चू पड़ी के इसी आशय को आगे बढ़ाते हैं। पहले जो खजूर को ऊपर जाकर तोड़ने के खतरे की चर्चा हुई, आगे उनकी चर्चा है, जिनको तोड़ने के लिए खजूर की भांति ऊपर चढ़ना नहीं पड़ता। इनमें से एक है अंगूर जिसकी लता होती है, इसके फलों को सुगमता से तोड़ लिया जाता है, दूसरा महुआ जो होता तो पूरा वृक्ष है, किन्तु इसके फल पककर मधुर हो जाते हैं और स्वतः ही टपकते रहते हैं। इन्हें तोड़ने के लिए खजूर पर चढ़कर लंगूर नहीं बनना पड़ता है। सभी वृक्ष–वनस्पतियाँ, मानव प्राणियों की संजीवनी ऊर्जा का आधार व जीवन माधुर्य प्रदाता है, उनका यथोचित उपयोग चाहिए।

मधु वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। यजु. 13.27

पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार ने मनोहारी सार यों प्रस्तुत किया है। जो अपने जीवन में सब क्रियाएं ऋतु के अनुसार करते हैं वही ऋतायन हैं। (ऋत) उनकी सब क्रियाएं ठीक स्थान व ठीक समय पर होती हैं। ऋत का अर्थ यज्ञ भी है। इनका जीवन यज्ञीय होता है। ये लोग स्वार्थ से ऊपर उठकर यज्ञमय जीवन वाले होते हैं। 'सर्वभूत हिते रत' होते हैं। इस (ऋतायते) ऋतमय जीवन वाले के लिए (वाताः) वायु भी मधुर होकर बहती हैं, हानिकर नहीं होती। (सिन्धव) नदियां भी इनके लिए मधुर बनकर (छरन्ति) चलती हैं। नदियों का जल सदा स्वास्थ्य वर्धक होता है। (नः) हम ऋत का पालन करने वालों के लिए (औषधिः) औषधियाँ (माध्वीः) माधुर्यवाली (सन्तु) हो। यह तो रही वेद की दिशा, किन्तु किसी मान्य हिन्दी कोश को उठाकर देख लीजिए, तो वहां लिखा मिलेगा – माध्वी अर्थात् मद्य, महुए की बनी मदिरा। इसी प्रकार अंगूर के पर्याय द्राक्षा से शारीरिक क्षीणता निवारक द्राक्षासव तो कम बनता है, मदिरा अधिक बनती है, जिसकी सर्व प्रचलित संज्ञा पड़ गई है अंगूर की बेटी।

मदिरा के कारण देश में सर्वत्र हाहाकार मचा हुआ है, जिसका पता आप दूरदर्शन, श्रृंखलाओं से लगा सकते हैं। जहां ग्राम, नगर की नारियां–पुत्री–पुत्रवधुएं हाथों में लाठी–डण्डा लेकर इसके विरोध में सत्याग्रह करती हैं। वे राजनेता भी हैं जो शासनसन से मद्यः पर प्रतिबन्ध लगाते हैं तो विपक्षी प्रतिबन्ध में रोड़े अटकाते हैं। इन्हीं दुर्व्यवस्थाओं के कारण एक मदिरा ही क्या अपमिश्रण से ग्रस्त सभी खाद्य विषैले हो रहे हैं। पापनाशिनी गंगा को धनलोलुप लोगों ने तापशापिनी बना दिया है। अतिथि परिव्राट महात्मा से उपदेश की इच्छा से सम्राट उद्यान में पहुंच गये। अभिवादन के बाद बोले – स्वामिन मुझे कुछ शिक्षा दीजिए। महात्मा ने कहा – ठीक है, शिक्षा मैं नहीं आप स्वयं देंगे।' यदि आप रेगिस्तान में असह्य प्यास के मारे व्याकुल हो उठें और श्रीमान को कोई आधे राज्य के बदले एक लोटा पानी दे तो लोगे कि नहीं? सम्राट बोल पड़े अवश्य ही लेना पड़ेगा। महात्मा ने फिर पूछा – यदि उस पानी को पीकर आपका पेट फूलने लगे और मूत्र रूक जाये, वेदना से आप कराह उठें। आपको स्वस्थ करने के लिए कोई वैद्याचार्य आपके आधे राज्य की मांग करे तो आप क्या करेंगे? स्वामिन ऐसी दशा में शेष बचा आधा राज्य भी दे दूंगा। महात्मा बोले ऐसे राज्य ऐश्वर्य पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिए जो एक लोटे पानी और फिर शरीर से उसका विकार दूर करने के लिए बिक जाये। राज्य करना चाहिए किन्तु निरभिमानता के साथ राज्य प्रजा की पितृवत पालना के लिए करना चाहिए। कवि ने यही सीख दी है।

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।
पानी बिना न ऊबरे मोती–मानुष–चून।।

अंधविश्वासों से दूर रहें

- अशोक आर्य

माता–पिता जहाँ अपनी सन्तान को ग्रहण करने योग्य बातें सिखायें, वहाँ यह भी आवश्यक है कि उन्हें अनेक प्रकार के मिथ्या विश्वासों, भूतप्रेत विषयक मूर्खतापूर्ण धारणाओं तथा विज्ञान एवं सृष्टिक्रम विरूद्ध मान्यताओं के जाल में फंसने से बचायें। भूतप्रेतों, डाकिनी, शाकिनी एवं योगिनी आदि कल्पित योनियों के प्रति अंधविश्वास यों तो संसार के सभी देशों में पाया जाता है, किन्तु भारत की धरती इसके लिए अधिक उर्वरा सिद्ध हुई है।

भूतप्रेत तथा मृत व्यक्तियों की अशान्त आत्माओं द्वारा संसारी लोगों को पीड़ित करने के झूठे किस्से जनसाधारण में

तो शास्त्रवाक्यों की भांति सत्य समझे ही जाते हैं। प्रायः देखा जाता है कि सुपठित तथा शिक्षित व्यक्ति भी इन मूर्खतापूर्ण धारणाओं के जाल से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाते। ऋषि दयानन्द ने इस प्रसंग में मनुस्मृति के निम्न श्लोक को उद्धृत कर यह स्पष्ट कर दिया कि प्रेत शब्द वैदिक एवं आर्ष शास्त्रों में मृत व्यक्ति का वाचक है, न कि किसी भयावनी योनि विशेष का। श्लोक इस प्रकार है –

गुरो प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्।
प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुद्धयति।। (मनु. 5/65)

यहाँ प्रेत शब्द मृतक शरीर का वाचक है जब कि प्रेतहार उन व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हुआ है तो मृत शरीर को उठाकर श्मशान तक ले जाते हैं। मनुस्मृति के टीकाकार कुल्लूक भट्ट ने भी 'प्रेतस्य' का अर्थ 'मृतस्य' ही किया है। इसी प्रकार संस्कृत का 'भूत' शब्द भी अनेकार्थवाची तो है, किन्तु उससे किसी डरावनी योनि विशेष का अर्थ लेना उचित नहीं। संस्कृत साहित्य में भूत जो हो चुका, उत्पन्न, निर्मित, अतीत, जीवित प्राणी, जड़ तत्त्व आदि के अर्थों में आता है। शास्त्रों में भूतात्मा का प्रयोग जीवात्मा के लिए हुआ है। मनु जब विद्या और तप से भूतात्मा की शुद्धि की बात करते हैं। (5/106) तो टीकाकार कुल्लूक भट्ट इसका अर्थ (सूक्ष्मादिलिंगशरीरावच्छिन्नो जीवात्मा) करता है। उपनिषदों में 'भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः' का प्रयोग मिलता है। यहाँ सभी प्राणियों के लिए भूत शब्द का प्रयोग हुआ है।

प्रायः देखा जाता है कि अनेक प्रकार के मानसिक रोगों के कारणों को न समझकर लोग ऐसे रोगियों में भूतप्रेत आदि हानिकारक योनियों का आवेश मान लेते हैं तथा मनोवैज्ञानिक चिकित्सा न कराकर अनेक प्रकार के मंत्र तंत्र पुरश्चरण आदि अपकृत्यों द्वारा रोगी का उपचार कराते हैं। इस प्रसंग में ऋषि ने स्पष्ट किया है कि सन्निपात आदि शारीरिक और उन्माद आदि मानस रोगों के मूल कारणों का निदान न कर सकने के कारण अज्ञानी लोग यह मान लेते हैं कि रोगी में भूत–प्रेत, चुड़ैल आदि का प्रवेश हो गया है। वस्तुतः संस्कृत भाषा में भूतप्रेत से भिन्न यक्ष, राक्षस, पिशाच, नक्तंचर (निशाचर) आदि अन्य शब्द भी हैं जो जन सामान्य में अपयोनियाँ मानी जाती हैं। किन्तु यदि इनके व्युत्पत्तिलभ्य अर्थों का विचार किया जाये तो इनसे ऐसे जीव जन्तुओं, कीटाणुओं तथा रोग उत्पन्न करने वाले क्रिमियों का अभिप्राय लेना होगा जो मनुष्य शरीर को हानि पहुँचाते हैं। रोग उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म कृमि तथा विषाणु ही राक्षस, यातुधान तथा पिचाश हैं। ऐसे रक्षगणों (राक्षसों) को नष्ट करने वाला वैद्य ही राक्षोदा कहलाता है। इस विचार की पुष्टि पाश्चात्य लेखकों ने भी की है। बैबिलोनिया और असीरिया की मिथक कथाओं का विवेचन करने वाला विद्वान् डोनाल्ड मैकेंजी लिखता है – "Germs of diseases were depicted by lively imagination as invisible demons who derived nourishment from the human body. (सत्यार्थ प्रकाश, भाष्य, पं. वाचस्पति लिखित से उद्धृत पृ. 119) अर्थात् विभिन्न रोग उत्पन्न करने वाले क्रिमियों की अदृश्य राक्षसों के रूप में कल्पना कर ली गई। ये राक्षस कहलाने वाले क्रिमि शरीर से ही पोषण प्राप्त करते हैं।

तथापि यह स्वीकार करना होगा कि भूत प्रेत आदि के नाम पर उल्लू सीधा करने वाले पाखण्डी लोगों की भी इस संसार में कमी नहीं है। ऐसे दुष्ट प्रकृति के लोग भोले–भाले लोगों की अंधविश्वासजन्य प्रकृति का लाभ उठाकर अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं। ऐसे तथाकथित ओझा तथा झाड़फूँक करने वाले लोगों को स्वामी दयानन्द धूर्त, महामूर्ख, पाखण्डी, अनाचारी तथा स्वार्थी कहते हैं तथा जन साधारण को इनसे बचने का उपदेश देते हैं। भूत–प्रेत आदि के मिथ्या प्रवादों को फैलाने तथा इससे अपना स्वार्थ सिद्ध करने में कभी–कभी ऐसे लोग भी सहायक सिद्ध होते हैं जिनसे हम इस प्रकार के अंधविश्वासों को प्रचारित करने की आशा भी नहीं रखते। आज के सनसनीखेज पत्रकारिता के युग में अनेक पत्र–पत्रिकायें भूत–प्रेत विशेषांक प्रकाशित करती हैं। यंत्र–मंत्र डोरा धागा ताबीज आदि के बहाने लोग अपनी दूकानदारी चलाते हैं। हिन्दी की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका वर्ष में एक बार भूत–प्रेत विशेषांक निकालती है जिसमें कपोल कल्पित कहानियों के द्वारा पाठकों को अंधविश्वासी बनाया जाता है। कहानी पत्रिका मनोहर कहानियाँ भी ऐसे विशेषांक प्रकाशित करती हैं। ऋषि दयानन्द की सम्मति में ऐसे पाखण्डों का सर्वथा उन्मूलन तभी सम्भव है जब जनसाधारण में जागरूकता पैदा की जाये। इसके लिए मनुष्य के चिन्तन और विचार में आमूलचूल क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना आवश्यक है। मानव जब तक अपने में वैज्ञानिक सोच पैदा नहीं करता तथा प्रत्येक विचार तथा कृत्य को तर्क की कसौटी पर कसता नहीं, तब तक बौद्धिक विकास में बौना ही रहता है।

फलित ज्योतिष के छलावे और प्रपंच का रहस्योद्घाटन कर ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट किया कि ज्योतिष शास्त्र तो मिथ्या नहीं है क्योंकि उसके अन्तर्गत अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, खगोल विद्या तथा अन्तरिक्ष विद्या आदि जो विषय आते हैं वे तो सभी विज्ञान के अनुकूल हैं जब कि ग्रहों के क्रूर अथवा सौम्य होने तथा किसी व्यक्ति के भाग्य में निर्णायक होने का विचार सर्वथा मिथ्या एवं प्रमाण रहित हैं। अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन तथाकथित ज्योतिषियों ने अनेक कपोल कल्पित श्लोकात्मक ग्रन्थ भी बनाये जिनमें ऐसी–ऐसी मिथ्या बातें लिखी हैं मानों आदमी का भूत वर्तमान और भविष्य सब कुछ इन ज्योतिषियों के ही अधिकार में है।
फलित ज्योतिष, ग्रहशान्ति आदि पाखण्ड जाल को छिन्न–भिन्न कर जन्म पत्र को शोक पत्र बता ऋषि दयानन्द ने मानव को तर्कसिद्ध विचारों को स्वीकार करने और पुरुषार्थ युक्त जीवन यापन करने का परामर्श दिया।

बालकों का चित्त अत्यन्त कोमल तथा प्रत्येक प्रकार के संस्कार को ग्रहण करने में प्रवृत्त रहता है। यदि बाल्यकाल में उनको भूत–प्रेतों की कल्पित कहानियाँ सुनाई जायें तो आगे चलकर वे इस प्रकार के अंधविश्वासों से कभी मुक्त नहीं होंगे। इसलिए माता–पिता का यह आवश्यक कर्त्तव्य हो जाता है कि वे सन्तान के कानों में ऐसी मिथ्या विश्वासपूर्ण कथायें पड़ने ही न दें। जहाँ ओझा और भूत–प्रेत का निवारण करने वाले ढोंगी पुरुष अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मनोवैज्ञानिक रोगों से ग्रस्त स्त्री–पुरुषों की चिकित्सा के बहाने अनेक प्रकार के पाखण्ड रचते हैं तथा उनसे देवता की भेंट तथा प्रसाद के नाम पर धनहरण का षड्यन्त्र रचते हैं, वहाँ स्वामी दयानन्द की बताई युक्ति का प्रयोग ही समीचीन है। महाराज का यह स्पष्ट आदेश है कि जो कोई बुद्धिमान उनकी भेंट पाँच जूता, दण्डा, व चपेटा लात मारें तो उनके हनुमान, देवी और भैरव झट प्रसन्न होकर भाग जाते हैं। क्योंकि वह उनका केवल धनादि हरण करने के प्रयोजनार्थ ढोंग है।

फलित ज्योतिष तथा ग्रह शान्ति का पाखण्ड

बच्चों को जहाँ भूत प्रेतादि के कल्पित भय से दूर रखना आवश्यक है वहाँ यह भी जरूरी है कि वे भाग्यवादी न बनकर पुरुषार्थवादी बनें। भारत में जहाँ भूगोल, खगोल तथा ज्योतिष आदि वैज्ञानिक अध्ययनों का विकास हुआ वहाँ फलित ज्योतिष, फलादेश, भविष्य कथन, हस्तरेखा, सामुद्रिक शास्त्र जैसे पाखण्डपूर्ण विधि विधानों का भी प्रचलन हुआ जो मनुष्यों को परिश्रम तथा अध्यवसाय से विमुख कर मात्र भाग्य पर निर्भर रहना सिखाते हैं। फलित ज्योतिष का ही एकअंग जन्मपत्र बनाना तथा फलादेश सुनाना है। गणित ज्योतिष एक परिपूर्ण विज्ञान है जो गणितीय प्रक्रियाओं से वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालता है जबकि फलित सर्वथा कपोल कल्पित तथा युक्ति एवं तर्क विरूद्ध वाग्जाल मात्र पाखण्ड है। इन फलितज्ञ ज्योतिषियों को स्वामी दयानन्द ने ज्योतिर्विदाभास कहा है। भोले–भाले गृहस्थों के द्रव्यापहरण का षड्यन्त्र रचकर वे स्वनिर्मित जन्मपत्र का वाचन करते हैं और क्रूर ग्रहों का भय दिखलाकर उनकी शान्ति के लिए विभिन्न प्रकार के पूजा–पाठ दान आदि करवाते हैं।

तथ्य तो यह है कि पृथ्वी की ही भाँति सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि आदि सभी ग्रह जड़ हैं तथा वे मनुष्य के भाग्य का फैसला करने में असमर्थ हैं। वेदमंत्रों के वास्तविक भाव को न समझ कर मध्यकालीन आचार्यों ने जब वैदिक यज्ञों को जटिल कर्मकाण्ड बहुल तथा मात्र शब्द साम्य के आधार पर अनेक निरर्थक कर्मों के मंत्रों के विनियोगों का विधान किया तो नवग्रहों की पूजा में कतिपय मंत्रों को नियोजित कर दिया गया। उदाहरणार्थ सविता देवता का मंत्र **'आ कृष्णेन रजसा'** (यजु 33/43) सूर्य का वाचक माना गया तो 'उद्बुध्यस्वाग्ने' (यजु 15/54) को 'बुध' का बोधक स्वीकार किया गया। सर्वाधिक हास्यास्पद तो 'शनि' के लिये विनियुक्त मंत्र व्यवस्था थी, क्योंकि 'शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तुनः (यजु 36/12)' में प्रयुक्त 'शं नो' पद जहाँ हमारे लिये कल्याण और मंगल का अर्थ देते हैं वहाँ उन्हें एक ही मान कर शनैश्चर के लिए प्रयुक्त मान लिया गया। ऐसे विनियोग रूप समृद्ध नहीं थे।

इस प्रकार फलित ज्योतिष के छलावे और प्रपंच का रहस्योद्घाटन कर ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट किया कि ज्योतिष शास्त्र तो मिथ्या नहीं है क्योंकि उसके अन्तर्गत अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, खगोल विद्या तथा अन्तरिक्ष विद्या आदि जो विषय आते हैं वे तो सभी विज्ञान के अनुकूल हैं जब कि ग्रहों के क्रूर अथवा सौम्य होने तथा किसी व्यक्ति के भाग्य में निर्णायक होने का विचार सर्वथा मिथ्या एवं प्रमाण रहित हैं। अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति के लिए इन तथाकथित ज्योतिषियों ने अनेक कपोल कल्पित श्लोकात्मक ग्रन्थ भी बनाये जिनमें ऐसी–ऐसी मिथ्या बातें लिखी हैं मानों आदमी का भूत वर्तमान और भविष्य सब कुछ इन ज्योतिषियों के ही अधिकार में है। यथा एक फलित ग्रन्थ में लिखा है :–

शनिक्षेत्रे यदा भानुः भानुक्षेत्रे यदा शनि।
सदा एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति।।

अर्थात् शनि के क्षेत्र में सूर्य हो और सूर्य के क्षेत्र में शनि हो तो बालक होते ही मर जायेगा, चाहे साक्षात् शंकर ही उसके रक्षक क्यों न हों?वस्तुतः यह सारा पाखण्ड और प्रपंच गृहस्थियों के धन का हरण करने के लिए ही रचा गया था। फलित के नाम पर चलने वाले पाखण्ड को ही दृष्टि में रखकर आर्षप्रज्ञा के धनी आचार्य विष्णुगुप्त ने अपने अर्थाशास्त्र में लिखा था –

नक्षत्रमति पृच्छन्तं बालमर्थोऽतिवर्तते।
अर्थो ध्यर्थस्यं नक्षत्रं किं करिष्यन्ति तारकाः।। (9/142/4)

अर्थात् नक्षतों के फल को पूछने वाला राजा बाल बुद्धि ही है। वह अपने अभीष्ट फल को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि अर्थ की बुद्धि के लिए तो पुरुषार्थ अपेक्षित होता है। ये तारे (ग्रह) हमारा क्या हानि लाभ करेंगे?

इस प्रकार फलित ज्योतिष, ग्रहशान्ति आदि पाखण्ड जाल को छिन्न–भिन्न कर जन्म पत्र को शोक पत्र बता ऋषि दयानन्द ने मानव को तर्कसिद्ध विचारों को स्वीकार करने और पुरुषार्थ युक्त जीवन यापन करने का परामर्श दिया।

फलित ज्योतिष की ही भाँति शीतला जैसे अप देवी देवताओं की पूजा अर्चना आदि को भी पाखण्ड ही मानना चाहिए। हमारे देश में तो चेचक जैसी छूत की बीमारियों को भी शीतला जैसी कल्पित देवी के प्रकोप का परिणाम माना जाता है। ऐसे रोगों की समुचित चिकित्सा कराने की अपेक्षा अज्ञानी लोग डोरा, गण्डा और ताबीज के चक्कर में पड़ते हैं जिससे रोगी का मृत्युमुख गामी होना अवश्यम्भावी हो जाता है।

– नवलखा महल, उदयपुर, 'सत्यार्थ सौरभ' से साभार

वीतराग संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की 157वीं जयन्ती गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में धूमधाम से मनाई गई

स्वामी दर्शनानन्द जी के सपनों को साकार करके दिखायेंगे

– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही वर्तमान शिक्षा प्रणाली का विकल्प है

– स्वामी यतीश्वरानन्द

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के संस्थापक वीतराग संन्यासी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती की 157वीं जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय के प्रांगण में 4 दिन तक विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये। इस अवसर पर फुटबाल प्रतियोगिता भी हुई जिसमें गुरुकुल महाविद्यालय के अतिरिक्त गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय, गायत्री विद्यापीठ शांतिकुंज, एवं अन्य कई विद्यालयों की टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में गायत्री विद्यापीठ ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरे नम्बर पर गुरुकुल महाविद्यालय की टीम रही।

इस अवसर पर 4 फरवरी, 2019 को जन्म जयन्ती समारोह भी गुरुकुल महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के मंत्री एवं हरिद्वार ग्रामीण क्षेत्र के विधायक स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया। समारोह में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी विशेष रूप से सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त डॉ. अखिलेश योगी, ब्र. रामस्वरूप, आचार्य वेद प्रकाश पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, श्री रामरूप शास्त्री सदस्य प्रबन्ध समिति एवं श्री सत्यदेव गुप्ता सदस्य प्रबन्ध समिति, श्री बलवन्त सिंह चौहान मुख्याधिष्ठाता, श्री नन्दलाल राणा, श्री मोदी, श्री दिनेश चौहान एवं श्री धर्मसिंह आर्य भजनोपदेशक आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का मंच संचालन गुरुकुल के आचार्य श्री हेमन्त तिवारी ने बड़ी कुशलता के साथ किया। श्री धर्म सिंह आर्य ने ओजस्वी भजनों की प्रस्तुति दी तथा सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज की प्रशस्ति करते हुए कहा कि वे ऐसे वीतराग संन्यासी थे जिन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ–साथ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने के लिए अपना जीवन समर्पित किया। सन् 1907 में उन्होंने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की स्थापना की। निःशुल्क शिक्षा का यह एक मात्र शिक्षण संस्थान था जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी को निःशुल्क भोजन, आवास एवं पढ़ाई की सुविधा प्राप्त थी। स्वामी दर्शनानन्द जी उच्च कोटि के विद्वान् थे। उन्होंने षड्दर्शन पुस्तक लिखकर अपनी दार्शनिकता का परिचय दिया। वे परम ईश्वर विश्वासी थे और उनके जीवन की ईश्वर विश्वास से सम्बन्धित आश्चर्यजनक घटना सुनकर प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य होता है। एक बार गुरुकुल के भण्डारी ने स्वामी जी को सूचित किया कि आज भण्डार में राशन समाप्त है। दोपहर का भोजन नहीं बन सकेगा अतः क्या उपाय किया जाये। स्वामी दर्शनानन्द जी ने कहा कि तुम अपना काम करो और घण्टी बजाकर विद्यार्थियों को भोजनशाला में आने की सूचना दो। भण्डारी को और अन्य अध्यापकों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि स्वामी जी कैसे दृढ़ विश्वास के साथ यह कह रहे हैं कि विद्यार्थियों को भोजनशाला में बुलवाओ जबकि भोजन तो तैयार है ही नहीं। इसी बीच एक व्यक्ति तैयार भोजन लेकर स्वामी जी के पास पहुँचता है और उनके पैर पकड़कर क्षमा याचना करते हुए यह आग्रह करता है कि पिछले दिनों मैं गुरुकुल के विद्यार्थियों के लिए जो भोजन देना चाहता था वह न दे पाने के कारण मुझे आत्मिक ग्लानि होती रहती थी और मैं आपसे कभी संकोचवश मिल नहीं पाता था। अतः आपसे प्रार्थना है कि आज आप इस भोजन को बच्चों को ग्रहण करवा दो मैं सदैव आपका कृतज्ञ रहूंगा। स्वामी जी हंसने लगे और कहा कि ईश्वर की कैसी सुन्दर व्यवस्था है की आपको आज ईश्वर ने यह भोजन देकर महाविद्यालय में भेजा है क्योंकि आज भण्डार में राशन समाप्त होने के कारण बच्चों का भोजन नहीं बन पाया था और मैंने ईश्वर का विश्वास करके बच्चों को भोजनशाला में बैठाने के लिए अधिष्ठाता को आदेश दे दिया था, किन्तु मुझे पक्का विश्वास था कि ईश्वर इस स्थिति में भी अपनी कृपा अवश्य करेंगे और वह उन्होंने आपको भेजकर कर दी। इसलिए आप भोजन उठाओ और भोजनशाला में चलो। स्वामी जी उस व्यक्ति को लेकर भोजनशाला में पहुंचे और जैसे ही भोजन दिखाई दिया तो सभी अध्यापक, अधिष्ठाता एवं विद्यार्थी आश्चर्य में पड़ गये और ताली बजाकर स्वामी जी के इस दृढ़ ईश्वर विश्वास का स्वागत किया। स्वामी आर्यवेश जी ने गुरुकुल महाविद्यालय के प्रसिद्ध स्नातक पं. प्रकाशवीर शास्त्री का उदाहरण देते हुए कहा कि शास्त्री जी ने राजनीति के क्षेत्र में पदार्पण करके जो धाक जमाई उससे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अत्यन्त सम्मान प्राप्त हुआ। उन्होंने इस उक्ति को चरितार्थ करके दिखा दिया कि –

आयेंगे खत अरब से जिनमें लिखा ये होगा।
कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है।।

गुरुकुल महाविद्यालय से अनेक प्रतिष्ठित विद्वान एवं नेता निकले जिन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करके धूम मचाई।

गुरुकुल महाविद्यालय के मंत्री स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने अपने अध्यक्षतीय उद्बोधन में कहा कि जिन सपनों को लेकर स्वामी दर्शनानन्द जी ने गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की थी हम उन्हें अवश्य पूरा करके दिखायेंगे। स्वामी जी ने यह भी स्पष्ट किया कि यह गुरुकुल वैदिक संस्कृति का संवाहक है और आर्य समाज की धरोहर है, इसकी रक्षा एवं संवर्द्धन के लिए हम कोई कोर–कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे। स्वामी जी ने स्वामी आर्यवेश जी एवं अन्य आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद भी ज्ञापित किया। गुरुकुल के आचार्य श्री हेमन्त तिवारी ने स्वामी दर्शनानन्द जी के जीवन की अनेक घटनाएँ सुनाकर श्रोताओं के रोंगटे खड़े कर दिये। अपनी ओजस्वी वाणी से उन्होंने स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की और गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को भी विशेष रूप से उत्साहित किया। कार्यक्रम के अन्त में फुटबाल प्रतियोगिता में विजयी गायत्री विद्यापीठ की टीम को शील्ड एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा 3100/– रुपये का पारितोषिक भी प्रदान किया गया। इसी प्रकार महाविद्यालय की फुटबाल टीम को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर 2100/– रुपये की राशि तथा प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

आर्य राष्ट्र बनायेंगे अद्यः जीवानि माश्वः संसार के श्रेष्ठ पुरुषों एक हो जाओ

स्वामी दयानन्द सरस्वती

ओ३म्
बलमुपास्व्

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
अपघ्नन्तो अरावणः।।

स्वामी इन्द्रवेश

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

एवं

आर्य राष्ट्र के शंखनाद राजधर्म 'मासिक' पत्रिका की

स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर भव्य

स्वर्ण जयन्ती समारोह

दिनांक : 9, 10 मार्च, 2019 (शनिवार, रविवार)

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक (हरियाणा)

आप सादर सपरिवार आमंत्रित हैं।

अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनायें।

समारोह के मुख्य आकर्षण

- 27 फरवरी, 2019 से प्रारम्भ होने वाले चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति 9 मार्च, 2019 को प्रातः 10 बजे होगी।
- स्वर्ण जयन्ती समारोह का मुख्य कार्यक्रम 10 मार्च, 2019 को प्रातः 10 बजे से सायं 4 बजे तक होगी।
- सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के 50 वर्ष की गतिविधियों की चित्रमय झांकी, चित्र प्रदर्शनी, डाक्यूमेंटरी भी दिखाई जायेगी।
- परिषद् की स्मारिका प्रकाशित होगी।
- राजधर्म के 50 वर्ष के सभी अंकों में से सामयिक एवं विचारोत्तेजक लेखों का संग्रह करके विशेषांक प्रकाशित किया जायेगा।
- परिषद् के संस्थापक सदस्यों, पदाधिकारियों, व्यायाम शिक्षकों, कार्यकर्ताओं व विशेष सहयोगियों को सम्मानित किया जायेगा।
- परिषद् का भावी रचनात्मक कार्यक्रम घोषित किया जायेगा।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, स्वामी इन्द्रवेश फाऊण्डेशन, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, हरियाणा

9416630916, 9354840454, 9468165946

बढ़ती नास्तिकता मिटती संवेदना

– आर्य आशीष कादियान (सिवाह)

जिस राष्ट्र ने कभी पूरे भूगोल पर अपना चक्रवर्ती राज्य स्थापित किया हो, कभी पूरे भूगोल के जिज्ञासुओं ने भारत के ऋषि मुनियों के चरणों में बैठकर वेदज्ञान प्राप्त किया हो। जिस राष्ट्र को भूगोल में फैले मांडलिक राज्यों ने अपनी इच्छा से कर देना स्वीकारा हो, जहां के नागरिकों ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' के अर्थों का पालन करते हुए आततायियों से तंग आकर भारत में शरण के लिए मजबूर लोगों को सहारा देकर सबल किया हो। यहां के नागरिकों की पहचान ही उनका चरित्र होता था। आज वही राष्ट्र वर्तमान की स्थितियों में जूझ रहा है।

आखिर क्यों हमारे सामने ये समस्याएं उत्पन्न हुई। क्या कारण रहा होगा कि जिस राष्ट्र के लोगों द्वारा अनेकों देवी-देवताओं, भगवानों को पूजा जाता रहा हो, आखिर वही देश फिर क्यों हजारों वर्षों की गुलामी के दंश को झेलता रहा। क्या हमारे पूर्वजों को अपनी योग्यता पर भरोसा नहीं था, या कारण कोई और रहा है। जिस राष्ट्र ने विश्व के लोगों के दिलों पर राज किया हो। क्यों आज वह अपनी विश्वसनीयता खो चुका है?जिस राष्ट्र की विशाल सेना को देखकर सिकंदर भी व्यास नदी को पार करने की हिम्मत भी न कर सका हो, वही आज हमारे राष्ट्र के सामने छोटा से देश बर्मा भी सीमा में घुसकर कब्जा करने की कोशिश करता है। वह भूल जाता है कि जिसको तो भारत के महान् सपूत सुभाष चंद्र बोस ने अपने दम पर ही आजाद कराया था और ब्रिटेन ने उस लड़ाई को जो ब्रिटिश सेना (उस समय जब भारत अंग्रेजों का गुलाम था) और आजाद हिंद फौज के बीच हुई थी, उसे पांच बड़ी लड़ाईयों में सबसे खतरनाक एवं बड़ी लड़ाई माना है।

हमें अपनी इस दयनीय दशा पर सोचना ही होगा। हम किस ओर जा रहे हैं। भारत का भविष्य क्या होगा। अपने वर्तमान को देखकर तथा अतीत के झरोखे में झांककर हमें निर्णय लेना ही पड़ेगा कि हमने कोई बहुत बड़ी भूल तो नहीं की जिसका खामियाजा हमें ही नहीं आने वाली पीढ़ियों को भी भोगना पड़ेगा। हमारे पूर्वजों ने भी भोगा था। हम भी भुगत रहे हैं। आने वाली पीढियाँ जिससे बिल्कुल अनजान होगी।

आखिर हमने क्या-क्या गलतियां की है जिसका हमें परिणाम आज सर्वत्र दिखाई दे रहा है। इसका एक ही उत्तर है वह है हमारी नास्तिकता-नास्तिकता हां नास्तिकता। भारत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक न जाने कितने धर्मों, पंथों, सम्प्रदायों, विश्वासों, आस्थाओं, अंधश्रद्धा के लोग रहते हैं। सबके अपने-अपने भगवान देवी देवता कुल देवता, नगर देवता, तथा ग्राम देवता आदि हैं। सबने अपने-अपने तौर-तरीकों से किसी न किसी को अज्ञानतावश कोई न कोई पद दे रखा है। किसी को श्री श्री 1008, किसी को दादा, किसी को अवतार, किसी को मैया या माता जैसे शब्दों से सम्मान प्रदान किया हुआ है। न जाने क्यों हमने यह विचार करना जरूरी नहीं समझा कि क्या भगवान भी मनुष्यों के जैसे जन्म लेता है, जिसे हमने अवतार घोषित कर रखा है। क्या भगवान भी दुख उठाता है। उसे भी जेलों में रहना पड़ता है।

क्या उस पर भी आरोप लगाया जा सकता है। उसके नाम पर धर्म की आड़ लेकर अज्ञानी मनुष्यों की भावनाओं की हत्या की जाती है। क्या भगवान भी कभी निर्दोष लोगों व जीव-जन्तुओं की हत्या का आदेश देता है, क्या वह मांस भक्षण की इजाजत देता है। क्या वह अपनी यथास्थिति में जिंदगी बसर करने की बात कहता है। क्या उसकी भी कोई मूर्ति या प्रतिमान होता है, क्या भगवान भी अनेक होते हैं?क्या देवी-देवता करोड़ों की संख्या में होते हैं?क्या वह भी रासलीलाएं रचाता है?उसकी भी भूख प्यास, गर्मी-सर्दी लगती है। क्या वह किसी को खुश करने के लिए कुर्बानी भी लेता है?क्या वह भी शैतान या राक्षस से डरता है?क्या उसके बराबर या तुल्य भी कोई दूसरी शक्ति है?क्या वह काल्पनिक क्षीरसागर, चौथे तथा सातवें आसमान पर रहता है?हमारी कल्पनाएं बढ़ती गई, हम भी नित नए-नए भगवान रचते चले गए।

हमने अलंकारों की मर्यादाओं को भी तोड़ डाला। हमने उनके मंदिर ऐसी-ऐसी जगहों पर बना डाले जहां मनुष्य को अनेक कष्टों व मुसीबतों से होकर जाना पड़ता है। हमने उस ईश्वर को परीक्षक बना दिया। क्या ईश्वर भी अपनी संतानों की परीक्षा लेकर देखता है कि कौन-कौन कितनी यातनाएं सह सकता है?अपनी अज्ञानता व अंध विश्वास के कारण आई मुसीबतों तथा दुर्गति को हमने परमेश्वर द्वारा रचित खेल मान लिया तथा कहते चले गये कि भगवान हमारी परीक्षा ले रहा है तथा गुलामी के जंजीरों में जकड़ते चले गए। अरे! क्या हम इतना भी नहीं जान पाए कि वह ईश्वर तो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक चेतन, सत्ता है। उसे जन्म लेने की कोई आवश्यकता नहीं, वह अनादि, नित्य, पवित्र तथा सृष्टिकर्ता है। उस ईश्वर को खोजने की बजाए हमने उसकी जगह अपनी नाकामयाबी से बचने के लिए अपनी (अविद्या) बुद्धि का प्रयोग करके काल्पनिक भगवानों की फौज तैयार करके जगत के सामने रख दी कि जिसे जो जिस के हिसाब से पसंद आए उसे वह अपना ले। और उसी नासमझी का परिणाम है नास्तिकता, घनघोर नास्तिकता।

अरे! ईश्वर तो अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर-अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उस ईश्वर के सच्चे स्वरूप को न समझ पाने के कारण हमनें अपने लोगों को अपने से अलग कर दिया। नित नए मत, पंथ, सम्प्रदाय बनते चले गए, जिसके मन जो आया, उसने अपना वैसा ही मत चलाया। विद्या के अभाव में अविद्या बढ़ती चली गई और हम शिरोमणि के स्थान से दुर्गति के रसातल पर पहुँच गए। आज अगर हमारे राष्ट्र के सीमाओं की रक्षा करते हुए हमारे सैनिक मारे जाते हैं। प्रतिदिन दुश्मन देशों की तरफ से युद्धविराम का उल्लंघन होता रहता है। परन्तु हमारे नेताओं के ऊपर जूं तक भी नहीं रेंगती। दिन दहाड़े सरे आम किसी व्यापारी को गोली मार दी जाती है। किसी के बच्चे का अपहरण कर लिया जाता है। हमारी माताओं, बहनों के साथ जो दर्दनाक घटनाएं होती हैं, उनसे हमारी रूह तक नहीं कांपती। किसी जाति विशेष के लोगों को निशाना बनाकर दंगे-फसाद, शर्मिंदगी भरे शब्दों से उनका तिरस्कार होता है, तो हम सिर्फ अफसोस जाहिर तक नहीं कर पाते। स्कूलों-कॉलेजों में जिस तरह रिश्तों की डोरें टूटती जा रही है, उससे किसी को कोई आपत्ति नहीं है। रूढ़ियों तथा अंधविश्वास की परम्पराओं के फटे हुए मैले कुचैले थैलों को अपने छाती से लगाकर हम उठाए फिरते हैं। परन्तु जब अंधविश्वास के धागों को बांधकर भी दूसरों के बहनों, माँ, बेटियों में अपनापन नजर नहीं आता। उनको पराई समझकर जलील हरकतों से शर्मिंदा करने में भी इन्हें शर्म नहीं आती।

कभी जाति के नाम पर आरक्षण कभी वोट बैंक की राजनीति, कभी वंशवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद, अलगाववाद के कारण बंटते छोटे-छोटे राज्यों से उभरती परिस्थितियों में। क्या इन परिस्थितियों में भारत के तथाकथित अनेकता में एकता का नारा देने वाले संगठन से देश को खंड-खंड होने से बचा सकने में समर्थ होंगे?अगरे पूरे राष्ट्र के अन्दर नजरे दौड़ाएं तो हालात इससे भी बदतर मिलेंगे।

असुरक्षा के माहौल में हजारों लड़कियों की पढ़ाई के रास्ते बंद हो जाते हैं। लाखों निरीह प्राणियों को सूरज की पहली किरण निकलने से पहले ही वध कर दिया जाता है। कब कहां बम धमाके हो जाएं, किसी को कोई खबर नहीं, कब, कहां किसमें दंगे हो जाएं किसी को कोई मतलब नहीं। कभी झाड़ियों के बीच, कभी रेलवे लाइन, कभी कचरों के डिब्बों में नवजात बच्चों का मिलना किसी को भी विचलित नहीं करता। क्या आज ही मनुष्य की कीमत को अच्छी तरह जाना गया कि उसे सिर्फ क्षणिक स्वार्थ के खातिर अपनी असमर्थता को छुपाने के लिए कायरों की तरह जिंदगी का सच स्वीकारा नहीं जाता। क्यों हम इतने बेशर्म, आलसी, निकम्मे, संवेदनाहीन, लाचार, परेशान तथा बेवकूफ हो गए हैं कि हमारी जानने की ही इच्छा समाप्त हो गई। क्या हमारे अंदर ऋषि-मुनियों का रक्त प्रवाहित होना बंद हो गया। क्या हमारे अंदर भगत सिंह, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, सावरकर, बिस्मिल, शेखर, प्रताप, शिवाजी की तरह राष्ट्र के हालातों को देखकर खून नहीं खौलता। क्या हम चुपचाप बैठकर तमाशा देखने के लिए आत्मसमर्पण के लिए ही तैयार बैठे हैं।

मैं सभी राष्ट्रभक्त नागरिकों से आह्वान् करता हूँ। कि हमें जानना होगा, सोचना होगा, विचार करना ही होगा। अपनी बुद्धि से विद्या को अर्जित कर तर्कशक्ति के सहारे ईश्वर, उसके स्वरूप उसके द्वारा रचित संसार को समझ कर उसके संविधान के अनुसार चलना ही होगा। अगर हमें अपने ऋषि-मुनियों की इस धरती पर पैदा होने तथा अपने क्रांतिकारियों पर गर्व है तो उनकी उस भावना व उनके अधूरे सपने को पूरा करने के लिए हमें आगे आना ही होगा। हमें अपने अतीत से सबक लेकर वर्तमान में सुधार करके भविष्य के लिए योजना बनानी ही होगी। इसके लिए हमें दो दिवसीय सत्र में हमें आर्ष विद्या अर्जित करनी ही होगी। ''सच्चा आस्तिक'' वही कहलाता है जो ईश्वर को मानता है, ठीक-ठीक जानता है तथा ठीक विधि से उसकी उपासना करता है। आओ विचारे तथा जाने उस ईश्वर के सच्चे स्वरूप को पहचाने जिनका हमारे श्रेष्ठ पूर्वजों (राम, कृष्ण, वीर हनुमान) ने कभी अनुसरण किया। आओ हम भी वेदों की ओर लौटे तथा अपने जीवन को सुखमय बनाते हुए परलोक का भी सुधार करें।

आखिर हमने क्या-क्या गलतियां की है जिसका हमें परिणाम आज सर्वत्र दिखाई दे रहा है। इसका एक ही उत्तर है वह है हमारी नास्तिकता-नास्तिकता हां नास्तिकता। भारत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक न जाने कितने धर्मों, पंथों, सम्प्रदायों, विश्वासों, आस्थाओं, अंधश्रद्धा के लोग रहते हैं। सबके अपने-अपने भगवान देवी देवता कुल देवता, नगर देवता, तथा ग्राम देवता आदि हैं। सबने अपने-अपने तौर-तरीकों से किसी न किसी को अज्ञानतावश कोई न कोई पद दे रखा है। किसी को श्री श्री 1008, किसी को दादा, किसी को अवतार, किसी को मैया या माता जैसे शब्दों से सम्मान प्रदान किया हुआ है। न जाने क्यों हमने यह विचार करना जरूरी नहीं समझा कि क्या भगवान भी मनुष्यों के जैसे जन्म लेता है, जिसे हमने अवतार घोषित कर रखा है। क्या भगवान भी दुख उठाता है। उसे भी जेलों में रहना पड़ता है।

पाश्चात्य सभ्यता का प्रतीक वैलेण्टाइन–डे

– मृत्युंजय दीक्षित

हर वर्ष 14 फरवरी का दिन वैलेण्टाइन डे यानी प्रणय दिवस को पूरे धूमधाम व उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस तिथि को मनाने के लिए पूरी दुनिया भर में विशेष तैयारियाँ की जाती हैं। हर टूर कम्पनी युवा जोड़ों को आकर्षित करने के लिए तरह–तरह के टूर पैकेजों की घोषणा करते हैं। सभी होटल व पर्यटक केन्द्रों में अपार भीड़ उमड़ती है। भारत में भी अब यह प्रणय दिवस मनाने का प्रचलन काफी तेजी से बढ़ गया है। यह प्रणय दिवस कब, क्यों और कैसे प्रारम्भ हुआ इसका कोई विधिवत प्रामाणिक इतिहास नहीं प्राप्त होता है। कहा जाता है कि वैलेण्टाइन डे रोम के एक पुजारी के नाम पर मनाया जाता है जो शहीद हो गया था जिसे 14 फरवरी, 269 ई. को फलेमिनिया में दफनाया गया था। उसके अवशेष रोम के चर्च में रखे हुए हैं। एक और वैलण्टाइन संत के बारे में कुछ प्रमाण मिलते हैं लेकिन वे सब कपोल कल्पनाएं अधिक लगती हैं।

भारत में वैलेण्टाइन का प्रचार–प्रसार 1992 के बाद से अधिक हुआ जब भारत में रंगीन टी.वी. चैनलों की बाढ़ आने लगी। भारत में पूर्व प्रधानमंत्री स्व. नरसिंहा राव के शासनकाल में जब आर्थिक उदारीकरण का एक नया दौर प्रारम्भ हुआ देश में नई–नई कम्पनियों की बहार आने लगी तथा विदेशी लोग भारत को आसान बाजार और लोगों को आसान खरीददार समझने लगे तो फिर चर्च प्रेरित व संचालित कम्पनियों के माध्यम से विदेशी कम्पनियाँ युवाओं को बहकाने के लिए एक नया तरीका खोज कर ले आई हैं और वह है वैलेण्टाइन डे– अमूमन माना जाता है कि भारतीय जनमानस किसी विषय वस्तु की गहराई में न जाकर बस मायाजाल के चक्कर में फंस जाता है। यही कारण है कि आज भारत में विदेशी कचरा वैलेण्टाइन बेतहाशा फल–फूल रहा है। इसकी आड़ में विदेशी कम्पनियाँ जहाँ युवाओं को मानसिक रूप से खोखला कर रही हैं, वहीं भारतीय संस्कृति से भी कोसों दूर कर रही हैं। आज वैलेण्टाइन की आड़ में युवाओं में नशे की लत भी बढ़ रही है तथा अश्लीलता व नकली प्रेम के चक्कर में वहशी अपराधी भी बन रहे हैं। फिल्मी पर्दे पर अश्लीलता की बाढ़ आई हुई है। वैलेण्टाइन डे मनाने भर से ही युवाओं में एक–दूसरे के प्रति प्रेम नहीं आ जाता। भारतीय संस्कृति में जीवन के सात युगों तक वैलेण्टाइन मनाने की परमपरा और मान्यता है। अगर वैलेण्टाइन से आजीवन प्रेम सम्बन्ध प्रगाढ़ होते तो फिर आज तलाक के इतने मामले क्यों बढ़ रहे हैं।

वैलेण्टाइन डे विदेशी कम्पनियों का केवल और केवल अपने उत्पादों को बेचने के लिए प्रोपोगण्डा मात्र है। भारत में वैलेण्टाइन की प्राचीन परमपरा बहुत ही निराली रही है। यहाँ पर कामोत्सव मनाया जाता था जिसे मदनोत्सव कहा गया है। भारत में बसन्त पंचमी से लेकर होली के पर्व तक पूरे एक माह जमकर युगलों के लिए प्रणय मनाने का समय निर्धारित है।

भारत में आज वैलेण्टाइन को सबसे अधिक मीडिया, विज्ञापन कम्पनियाँ अधिक प्रोत्साहित कर रहे हैं। जिसके कारण भारत का परमपरागत पारिवारिक संस्कृति व सभ्यता भी बेहद प्रभावित हो रहे हैं। पारिवारिक संस्थायें टूट रही हैं। बिलगाव बढ़ रहा है। भारतीय परमपरा का प्रेम शाश्वत होता है। सदा के लिए होता है, जबकि यह दिवस तो बाद में अकेलापन और तनाव को ही बढ़ावा देने वाला होता है।

हालात इतने खराब हो चुके हैं कि समाचार पत्र–पत्रिकाओं में तथा मीडिया व सिनेमा यहाँ तक कि खेलों की दुनिया में भी वैलेण्टाइन स्पेशल की बाढ़ आई हुई है। फिल्मों व धारावाहिकों में प्रेम के नाम पर अश्लीलता को जमकर परोसा जा रहा है। आज गुलाब का फूल 50 रुपये से लेकर 100 रुपये तक का बिक रहा है। पता नहीं यह भेंड़चाल लोगों को किधर लेकर जायेगी। आज का युवा मीडिया से प्रभावित हो रहा है। सोशल मीडिया से प्रभावित हो रहा है जिसे आधुनिकता का नया रंग दिया जा रहा है। अगर आज हमने अपने युवाओं को अभी से अपनी परमपरागत मूल्यों के विषय में नहीं बताया तो भविष्य आज को ही दोष देगा। आज समय की आवश्यकता है कि युवाओं को खुली हवा में जीने दिया जाये, लेकिन उन्हें अपनी धर्म, संस्कृति और सभ्यता के साथ जोड़कर भी रखा जाये। देश के सभी हिन्दूवादी उग्र संगठनों शिसेना, बजरंग दल व संघ परिवार के तमाम आनुशांगिक संगठनों ने इस प्रणय दिवस पर हंगामा काटने का फैसला किया है लेकिन इसका कोई लाभ नहीं है। आज जरूरत इस बात की है कि आधुनिकता के साथ इन बुराईयों के साथ संघर्ष किया जाये।

– लेखक नवोत्थाथन लेख सेवा से जुड़े हैं
(नवोत्थान लेख सेवा, हिन्दुस्थान समाचार)

सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित अनुपम साहित्य विशेष छूट पर उपलब्ध

33 पुस्तकों का 620/– रुपये का सैट
मात्र 370/– रुपये में प्राप्त करें

1.	यजुर्वेद	250.00	
2.	बन्दा वीर बैरागी	18.00	
3.	आस्तिक नास्तिक संवाद	7.00	
4.	वेद संदेश	10.00	
5.	आत्मा का स्वरूप	8.00	
6.	आचार्य शुक्रराज शास्त्री	5.00	
7.	आर्य ध्वज	3.00	
8.	आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या	20.00	
9.	गो–हत्या या राष्ट्र हत्या	15.00	
10.	दयानन्द वचनामृत	5.00	
11.	इक्कीसवीं सदी का भारत	4.00	
12.	मुगल साम्राज्य का क्षय भाग–1, 2	20.00	
13.	मुगल साम्राज्य का क्षय भाग–3, 4	15.00	
14.	वेदांग प्रकाश	20.00	
15.	वैदिक सूक्ति सुधा	5.00	
16.	वेद और आर्य शास्त्रों में नारी	4.00	
17.	वेद का इस्लाम पर प्रभाव	3.00	
18.	वैदिक धर्म की रूपरेखा	22.00	
19.	वैदिक कोष संग्रह	15.00	
20.	विवेकानन्द विचार धारा	8.00	
21.	विषलता इस्लाम की फोटो	8.00	
22.	वैदिक सिद्धान्त	20.00	
23.	धर्मान्तरण	10.00	
24.	नारायण स्वामी जीवनी	8.00	
25.	काशी शास्त्र	3.50	
26.	आदर्श त्रैतवाद	35.00	
27.	ब्रह्म उपासना	8.00	
28.	वेद निबन्ध स्मारिका	30.00	
29.	आर्य समाज के संगठनात्मक सूत्र	20.00	
30.	श्रद्धांजलि	12.00	
31.	शिखों का तुष्टिकरण	2.00	
32.	एक ही मार्ग	3.00	
33.	मतान्तरण के अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र	4.00	

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित उपरोक्त 33 पुस्तकों का 620 रुपये का सैट महर्षि निर्वाण दिवस (दीपावली) पर 40 प्रतिशत की विशेष छूट पर मात्र 370 रुपये में दिया जा रहा है। डाक से भेजने पर डाक व्यय 130 रुपये अलग से देने होंगे, इस तरह से डाक से मंगाने वाले महानुभावों को कुल 500 रुपये भेजने होंगे। यह राशि ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से डी.डी. या मनीआर्डर द्वारा भेज सकते हैं और यदि स्वयं आकर ले जाते हैं तो उन्हें डाक व्यय नहीं देना होगा।

प्राप्ति स्थान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
''दयानन्द भवन'', 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष :– 011–23274771, 23260985

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें। **-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक**

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
दूरभाष :–011–23274771, 23260985

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पृष्ठ 1 का शेष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन का भव्य समापन

आवश्यक है कि सप्तक्रांति के द्वारा समाज को उपरोक्त समस्याओं से मुक्त किया जाये और परस्पर सौहार्द, प्यार एवं प्यार का वातावरण बनाया जाये। स्वामी आर्यवेश जी ने वर्ष 2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जन्म जयन्ती तक विशेष कार्य योजना बनाकर काम करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमें सरकार पर यह दबाव डालना होगा कि 2024 में महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म जयन्ती सरकार राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाये और महर्षि दयानन्द की स्मृति में विशेष योजना घोषित करे। स्वामी जी ने पूरे देश के आर्यों का आह्वान किया कि हम सभी संगठित होकर भावी कार्य योजना तैयार करेंगे और सरकार को यह एहसास करायेंगे कि स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रणेता महान क्रांतिकारी संन्यासी, समाज सुधारक, वेदोद्धारक एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी दयानन्द जी अनेक क्रांतिकारियों के प्रेरणास्रोत अनेक महात्माओं के गुरु और मानव मात्र के उद्धारक थे। ऐसे महान संन्यासी की 200वीं जन्म–जयन्ती अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावशाली तरीके से मनाई जानी चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि 2026 में स्वामी श्रद्धानन्द की बलिदान शताब्दी और 2027 में रामप्रसाद बिस्मिल की बलिदान शताब्दी आ रही है जिसे आर्य समाज उतने ही जोश और खरोश के साथ मनाना चाहता है। इन दोनों महापुरुषों के बलिदान और कार्यों को वर्तमान समय में प्रासंगिक बनाया जायेगा। स्वामी जी ने देश में पूर्ण शराबबन्दी तथा गौहत्या बन्दी की माँग की। उन्होंने कहा कि पिछले चुनाव में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गौमांस निर्यात एवं गौहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने की घोषणा की थी किन्तु 5 वर्ष पूरे होने के बावजूद यह घोषणा अभी क्रियान्वित नहीं हो पाई। आर्य समाज देश में जन–जागरण द्वारा इन मुद्दों को तेजी के साथ उठायेगा।

इस महासम्मेलन में सर्वश्री रविदेव गुप्ता, भानुप्रताप वेदालकांर (इन्दौर), आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, स्वतन्त्र कुकरेजा (करनाल), ईश आर्य (हिसार), डॉ. चन्द्रशेखर शर्मा (ग्वालियर)), यशपाल यश (जयपुर), गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य सुभाष शास्त्री (बंग्लादेश), गोपाल दुर्गा (अमेरिका), डा. लियो (फिलीपिन्स), पूर्व महापौर महेश शर्मा (दिल्ली), यशोवीर आर्य, विजय तोशनीवाल (कोटा), संतोष आर्य (पटना), डॉ. महेश विद्यालंकार दिल्ली, आचार्य विरेन्द्र विक्रम दिल्ली, नकुल देव आर्य उड़ीसा, वीरेन्द्र योगाचार्य फरीदाबाद, श्रीमती गायत्री मीणा नोएडा, श्री सुभाष बब्बर जम्मू, श्री यशपाल आर्य, श्रीमती वीणा वीरमानी, श्री कैलाश सांकला पार्षद, श्री भानू प्रकाश आर्य भजनोपदेक बरेली, श्री नरेन्द्र सुमन, श्री मित्र महेश आर्य अहमदाबाद, श्री शंकरदेव आर्य खंडवा, श्री आनन्द प्रकाश आर्य हापुड़, श्री मनोहर लाल चावला सोनीपत, श्री रामकृष्ण शास्त्री बहरोड़, श्री कृष्ण प्रसाद कौटिल्य हजारीबाग झारखण्ड, श्री देवेन्द्र भगत, श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, श्री धर्मदेव खुराना, श्री यशोवीर आर्य, श्री राम कुमार सिंह आर्य, श्री योगेन्द्र शास्त्री रोहिणी दिल्ली, श्री योगेन्द्र आर्य जीन्द, राष्ट्रीय कवि सारस्वत मोहन मनीषी, आचार्य संजीव 'रूप' आदि अनेक विद्वान वक्ताओं ने विभिन्न सम्मेलनों में अपने विचार प्रस्तुत किये। परिषद् के महामन्त्री श्री महेन्द्र भाई ने बड़ी कुशलता के साथ पूरे आयोजन में समन्वय बनाकर अपनी योग्यता का परिचय दिया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।